अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय - द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है, चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोधकार्य के अन्तर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जानेवाली समस्या की पूरी तसवीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार के पुस्तकों, ज्ञान–कोषो, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी–अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करते एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ–

संबंधित साहित्य की समीक्षा अनुसंधानकर्ता को किस क्षेत्र में वह अनुसंधान करने वाला है, उसमें वर्तमान ज्ञान से परिचय कराती हैं, तथा निम्नलिखित उद्देश्य पूर्ण करती है।

1. संबंधित साहित्य की समीक्षा से अनुसंधानकर्ता को अपने क्षेत्र की सीमा निर्धारित करने में सहायता मिलती है।
2. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है वह पुनः किया जा सकता है।
3. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही कार्य आगे बढ़ाया जा सकता है।
4. पूर्व अनुसंधानों के अध्धयन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से संबंधित नवीन समस्याओं का पता चलता है।
6. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में अनुसंधान की आवश्यकता होती है।
7. ड़पर्युक्त शोध विधियों के चयन में सहायता करना है।
8. परिकल्पना को लागू करने तथा अनुसंधान की रूपरेखा निर्धारित करने में सहायता मिलती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है।

2.3 पूर्वशोध आकलन–

✸ पानु, एस. आर. (1964), चण्ड़ीगढ़, पंजाब युनिवर्सिटी के एम.एड्. छात्र एस.आर. पानुं के द्वारा चण्ड़ीगढ़ के माध्यमिक विद्यालय के 80 अध्यापकों के न्यादर्श पर एक अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि उनके रूचि के अनुकूल विषयों को पढ़ने, उनके योग्यतानुसार सम्मान एवं वेतन की मात्रा, पदोन्नति की विधियों एवं अध्यापकों

के प्रति लोगो के दृष्टिकोण पर निर्भर है। अध्यापकों की संतुष्टि के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक कारकों का प्रयोग करते हुए प्रश्नावली प्रपत्र का निर्माण किया गया था एवं दो बिन्दु तक अर्थपूर्णता के परीक्षण से उपयुक्त निष्कर्ष प्राप्त किये गये। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि व्यावसायिक संतुष्टि का आयु, लिंग, योग्यता एवं वैवाहिक स्थिति में कोई अर्थपूर्ण संबंध नहीं है।

साक्षात्कार के समय उक्त अनुसंधानकर्ता ने यह भी अनुभव किया है कि अध्यापकों की मानसिक कुंण्ठा का मुख्य कारण विद्यालयीन प्रशासन संबंधित कारक थें। सभी अध्यापकों ने दस ऐसे प्रशासन संबंधी कारक बताए है कि विद्यालय में व्यवधान ड़ालते है, उनमें से मुख्य है–

(अ) शिक्षण के अतिरिक्त कार्यभार।

(ब) विद्यालय का समय।

(स) अनुत्तम परीक्षाफल के लिए अध्यापक को दंड़।

(द) अधिकारियों द्वारा उनके दैनिक कार्य में बाधा।

इन्हीं अध्यापकों से सत्य सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के लिए 10 व्यवसायों में से व्यवसाय चुनकर उन्हें क्रमानुसार लिखने को कहा गया और यह देखा गया कि उन लोगों ने अध्यापन व्यवसाय के लिए सातवां स्थान दिया था। 90 प्रतिशत अध्यापकों का प्रतिवेदन शिक्षण व्यवसाय के विरोध में था।

✸ **कमलजीत (1970),** चण्ड़ीगढ़, पंजाब विश्वविद्यालय की एम.एड़. के ही दूसरी छात्रा ने विद्यालय के प्रशासकों की प्रेरणा एवं संतुष्टि पर अध्ययन किया है, जिसमें व्यावसायिक प्राप्ति एवं असंतोष के अध्ययन के लिए उन्होंने स्वयं प्रश्नावली प्रपत्र का

निर्माण किया है। इस अध्ययन में प्रेरणा एवं संतुष्टि में 37 का सहसंबंध पाया गया है। इस अध्ययन से यह भी विदित हुआ है कि विद्यालयीन वातावरण, प्रेरणा एवं संतुष्टि में सकारात्मक अर्थपूर्ण संबंध है।

उपरोक्त दोनों अध्ययन यद्यपि विभिन्न वर्षो एवं विभिन्न व्यक्तियों पर किए गये हैं फिर भी इनसे यह पता चला है कि अध्यापकगण इसीलिए मानसिक कुंण्ठा से व्यथित है, क्योंकि उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार पुरस्कार नहीं प्राप्त है। उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता यद्यपि सामाजिक मान्यता की है, किन्तु प्रशासनिक अधिकारियों से उन्हें यह नहीं मिल रही है। सभी शिक्षक शिक्षण–कार्य के अतिरिक्त कार्यभार से दबे हुए है। कभी–कभी उन्हें वे विषय पढ़ाने पढ़ते है जिनमें उनकी रूचि नहीं होती। सामाजिक मान्यता एवं आत्म सम्मान की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए उन्हें वेतन एवं पदोन्नति के रूप में पुरस्कार नहीं प्राप्त है। इसीलिए उन्होंने अपने व्यवसाय को क्रमानुसार निम्न स्थान दिया है एवं अपने बच्चों को इस व्यवसाय के लिए कोई प्रेरणा नहीं देना चाहते हैं।

सान्धु, जे.एस. (1970), उक्त महाविद्यालय के एक दूसरे छात्र ने उत्तर भारत के चार महाविद्यालयों के अध्यापकों की एकेडीमिक स्वतंत्रता का अध्ययन व्यावसायिक संतुष्टि के संदर्भ में किया है। इस अध्ययन में विश्वविद्यालय के 60 अध्यापकों का न्यादर्श लिया गया था, जिसमें 8 प्रोफेसर 12 रीड़र, 40 लेक्चचर थें। अध्ययन के लिए विज्ञान एवं कला के अध्यापकों की समान संख्या ली गयी थी। न्यादर्श के द्वारा हर महा विश्वविद्यालय के प्रत्येक विभागों के अध्यापक चुने गये थें। सौ प्रश्न वाले प्रश्नावली

प्रपत्र को प्रयोग में लाया गया था। जिसमें से 50 प्रश्न एकेड़ीमिक स्वतंत्रता से संबंधित थें एवं दूसरे 50 प्रश्न व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित थें। इन दोनों कारकों में सहसंबंध मालूम किया गया जिसके अनुसार इन विभिन्न स्तरों के अध्यापकों में स्वीकारात्मक एवं अधीपूर्ण संबंध पाया गया जिसका विवरण इस प्रकार है।

अध्यापक –1 प्रोफेसर, 2. रीड़र, 3. लेक्चरर

सहसंबंध– 0.65 0.47 0.35

सभी प्रोफेसर ने यह प्रतिवेदन किया कि वे एकेड़ीमिक स्वतंत्रताओं से विशेष संतुष्ट है। 37.5 प्रतिशत प्रोफेसरों में 75 प्रतिशत के उपरान्त संतोष था। अनुसंधान में यह भी पाया गया कि प्रोफेसरों में रीड़र एवं प्रवक्ताओं की अपेक्षा एकेड़ीमिक स्वतंत्रता की संतुष्टि अधिक है।

✸ **शर्मा, आई.एस. (1970),** शिक्षकों की सामाजिक मान्यता एवं आत्मसम्मान के संदर्भ में चण्ड़ीगढ़, पंजाब युनिवर्सिटी के एम. एड़. के छात्र का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के अध्यापकों के द्वंद्व का अति महत्वपूर्ण कारण विद्यालयों में वरिष्ठ अधिकारियों का दंण्ड़ानात्मक दृष्टिकोण पाया गया। अध्यापकों ने बताया कि स्टाफ वरिष्ठ अधिकारियों के संकेत पर काम करता है। इस अध्ययन में सामाजिक मान्यता; आत्म सम्मान से बहुत ही कम पाई गई। अस्तु,सभी प्रकार के द्वंद्व परिलक्षित हुए हैं। उक्त अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह भी बताया गया है कि शिक्षक का आत्मसम्मान और उससे प्राप्त सामाजिक मान्यता में उसकी व्यावसायिक संतुष्टि का एक कार्यान्वित सूत्र बन सकता है।

✱ **रामकृष्णा, डी. (1980),** ने कॉलेज शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि, शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एंव व्यवसाय सहभाग का अध्ययन किया है। शोधकार्य के उद्देश्य थें कॉलेज शिक्षकों का व्यवसाय संतुष्टि स्तर का अध्ययन करना, शिक्षकों के व्यक्तित्व, जनतांत्रिक चर एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना, शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं शिक्षण व्यवसाय संतुष्टि के संबंध का अध्ययन करना, व्यावसायिक संतुष्टि एवं व्यवसाय सहभाग के संबंध का अध्ययन करना। इसके लिए शासकीय और अशासकीय कॉलेज के 400 महिला एवं पुरूष अध्यापकों का चयन बहुस्तरिय यादृच्छिक विधि से किया गया और व्यवसाय संतुष्टि सूची, अध्यापन अभिवृत्ति सूची, व्यवसाय सहभाग सूची, सामाजिक आर्थिक स्तर सूची का प्रदत्त संकल्न हेतु उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विश्लेषण, 'टी' परीक्षण, 'काई' वर्ग सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि कॉलेज के शिक्षक अपने व्यवसाय में संतुष्ट थें। अशासकीय कॉलेज के शिक्षण शासकीय कॉलेज के शिक्षक से अधिक संतुष्ट थें। महिला शिक्षिका पुरूष शिक्षक से अपने व्यवसाय में अधिक संतुष्ट थीं।

✱ **रेड्डी, बालकृष्णा पी. (1989),** ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य व्यावसायिक संतुष्टि स्तर, अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन करना, लिंग, वैवाहिक स्तर, शैक्षणिक योग्यता, कुटुंब का आकार, अनुभव, उम्र तथा व्यक्तित्व कारक के आधार पर व्यवसाय

के संबंधों का अध्ययन करना था। इसके लिए बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से 300 प्राथमिक शिक्षकों का चयन किया गया था। प्रदत्तों के संकल्न हेतु व्यवसाय संतोष सूची, शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति रुचि, कैटल की 16 पी.एफ. प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक संबंध होता है। व्यवसाय के विविध कारकों का अभ्यास करने से पता चलता है कि सात कारकों के प्रति शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि देखने को मिलती हैं, जबकि नौं कारकों के प्रति शिक्षकों में असंतुष्टि दिखाई देती है। व्यक्तित्व के चार कारकों और व्यवसाय सूची को जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उसमें सार्थक अंतर पाया जाता है।

तपोधन, एल.एन. (1991), ने गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य लिंग, क्षेत्र, जाति, योग्यता, विद्यालय के प्रकार, वैवाहिक स्तर, उम्र एवं अनुभव के आधार पर शिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण कैसा है वह जानना था। सर्वे विधि से 19 जिले में से 224 विद्यालयों का चयन किया गया। 1644 पुरुष, 942 महिला शिक्षक का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वयं शोधकर्ता ने **लिर्कट टाईप अभिवृत्ति सूची** प्रमाणितकृत की थी। जिसका निष्कर्ष यह आया कि लिंग, क्षेत्र एवं जाति, इनका अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति पर अधिक प्रभाव पड़ता है। योग्यता का शिक्षकों के अध्यापन व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। क्षेत्र एवं जाति, क्षेत्र एवं योग्यता, जाति एवं योग्यता, लिंग, क्षेत्र और जाति

एवं योग्यता इनके बीच अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

✸ पाण्ड़ा, बी.बी. (2001), ने आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय एवं कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। शोधकार्य के उद्देश्य आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और विभिन्न वर्गो जैसे की लिंग, अनुभव, स्थान के स्तर के आधार पर अध्ययन करना, आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर अध्ययन करना। आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय और कार्य संतुष्टि की अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना यह निश्चित् किये गए थें। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु आरब्रोक (1962) निर्मित **'शिक्षक अभिवृत्ति सूची'** का उपयोग किया गया। अनुसंधानकर्ता द्वारा बनायी गयी और प्रमाणित की गयी व्यावसायिक संतुष्टि सूची का उपयोग किया गया। शोधकार्य में पाया गया कि–

आसाम और उड़ीसा के ज्यादातर कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति है। दोनों राज्यों के 25 प्रतिशत कॉलेज शिक्षक लिंग, अनुभव, स्थान, स्तर के आधार पर भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति रखते हैं। आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों में लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सक्सेना, ज्योत्सना (1995), शिक्षकों के प्रभावशाली का संबंध उनके समायोजन, व्यवसाय संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

उद्देश्य–

(1) प्रभावशाली शिक्षक पहचानना। (2) शिक्षक का प्रभाव एवं समायोजन में संबंध, शिक्षक का प्रभाव एवं व्यवसाय संतुष्टि, (3) शिक्षक का प्रभाव एवं अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति इनका संबंध देखना।

उन्होंने सर्वे पद्धति से 545 शिक्षक ग्रामीण क्षेत्र के, 33 सेकेण्ड्री विद्यालयों के लिये गये थें। शहरी क्षेत्र के 22 विद्यालय को चुना था। न्यादर्श का चयन यादृच्छित विधि से किया गया था। उसमें कट्टी एवं वनूर द्वारा निर्मित 'शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची' का उपयोग किया था। इसमें सहसंबंध एवं 'टी' परीक्षण सांख्यिकीय प्रयुक्त विधि का उपयोग किया गया है।

इस अनुसंधान से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में समायोजन और अपने व्यवसाय में संतुष्ट है तथा शिक्षण अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। शहरी, शासकीय, महिला शिक्षक, अधिक अनुभव, अप्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों में से अधिक अच्छा है। पदव्युत्तर शिक्षक का समायोजन पदवीधारक शिक्षक से अधिक अच्छा है। ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावशाली शिक्षक अपने व्यवसाय में शहरी क्षेत्रों के शिक्षक की तुलना में अधिक संतुष्ट है।

जोशी, ऋचा. (2007–08), ने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय के एम.एड़. की छात्रा ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् 500 शिक्षकों में से यादृच्छिक 100 शिक्षकों का ही यादृच्छिक न्यादर्श द्वारा चयन करके उनकी व्यवसाय के प्रति अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसके साथ उन अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया है। जिसका उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति का मापन करना, उनकी व्यावसायिक संतुष्टि में संतुष्टि स्तर को ज्ञात करना, अध्यापन अभिवृत्ति का सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप में वर्गीकृत करना, लिंग, के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन करना था।

सर्वेक्षण विधि द्वारा 100 अध्यापकों के यादृच्छिक न्यादर्श से चुनकर प्रदत्त संकलन हेतु **'डॉ. एस.पी. अहलुवालिया'** की 'अध्यापक अभिवृत्ति सूची' एवं **'डॉ. एस.पी. आनंद'** की 'व्यावसायिक संतुष्टि मापनी सूची' का उपयोग किया गया था। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध है। अध्यापन अभिवृत्ति का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है। अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है। साथ में लिंग का अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर असर नहीं होता है।

ये सभी अध्ययन जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति तथा व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्यापन के प्रभाव से संबंधित रहे हैं। वे सभी प्राथमिक,

माध्यमिक एवं विश्वविद्यालय के अध्यापकों से संबंधित है। विभिन्न शोधकर्ताओं ने भिन्न-भिन्न कारकों जैसे- आयु, लिंग, योग्यता, क्षेत्र, वैवाहिक स्थिति, एकेड़ीमिक स्वतंत्रता एवं सामाजिक मान्यता तथा आत्मसम्मान आदि कारकों में अध्यापकों की संतुष्टि का अध्ययन किया और देखा कि उनकी मूल आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए उन्हें वेतन एवं पदोन्नति के रूप में कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं है, इसीलिए अधिकांश अध्यापक असंतुष्ट है।

इस प्रकार संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से यह ज्ञात होता है कि बहुत से शोधकर्ताओं द्वारा माध्यमिक, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किया गया है। प्रायः देखा गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि, उनकी अभिवृत्ति, अध्ययन-अध्यापन पर उनका प्रभाव के क्षेत्र में बहुत ही कम अध्ययन हुए हैं। इसीलिए शोधार्थी ने अनुसंधान कार्य के लिए शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का उनके अध्ययन-अध्यापन पर प्रभाव का अध्ययन किया है।